अध्ययन सामग्री
बी० ए० पार्ट - 3
हिन्दी
डॉ० वज्रांग प्रताप केसरी
हिन्दी विभाग
एच० डी० जैन कॉलेज, आरा।

दिनांक -16/02/24

व्यतिरेक अलंकार :- उपमेय को उपमान से श्रेष्ठ बताना व्यतिरेक अलंकार कहलाता है। व्यतिरेक शब्द का अर्थ है विशेष (वि) प्रकार का अतिरेक इसमें गुण विशेष के कारण उपमान की अपेक्षा उपमेय के अधिक उत्कर्ष का वर्णन होता है।

यथा:- संत हृदय नवनीत समाना। कहा कविन्ह पर कहै न जाना॥
निज परिताप द्रवै नवनीता। पर दुःख द्रवै सुसंत पुनीता॥

अनेक कवियों ने संत को नवनीत मारवन के समान बताया है। तुलसीदास उनकी मान्यता का खंडन करते हुए कहते हैं कि मारवन तो अपने ताप से पिघलता है किन्तु संत दूसरे के दुःख से द्रवित होते हैं अतः संत मारवन से श्रेष्ठ हैं।